

(पद्धति)

हे ज्ञानस्वभावी सीमंधर! तुम हो असीम आनंदरूप ।
अपनी सीमा में सीमित हो, फिर भी हो तुम त्रैलोक्य भूप ॥३॥
मोहान्धकार के नाश हेतु, तुम ही हो दिनकर अति प्रचंड ।
हो स्वयं अखंडित कर्म शत्रु को, किया आपने खंड-खंड ॥४॥
गृहवास राग की आग त्याग, धारा तुमने मुनिपद महान ।
आतमस्वभाव साधन द्वारा, पाया तुमने परिपूर्ण ज्ञान ॥५॥
तुम दर्शन ज्ञान दिवाकर हो, वीरज मंडित आनंदकंद ।
तुम हुए स्वयं में स्वयं पूर्ण, तुम ही हो सच्चे पूर्णचन्द ॥६॥
पूरब विदेह में हे जिनवर! हो आप आज भी विद्यमान ।
हो रहा दिव्य उपदेश, भव्य पा रहे नित्य अध्यात्म ज्ञान ॥७॥
श्री कुन्दकुन्द आचार्यदेव को, मिला आपसे दिव्य ज्ञान ।
आत्मानुभूति से कर प्रमाण, पाया उनने आनन्द महान ॥८॥
पाया था उनने समयसार, अपनाया उनने समयसार ।
समझाया उनने समयसार, हो गये स्वयं वे समयसार ॥९॥
दे गये हमें वे समयसार, गा रहे आज हम समयसार ।
है समयसार बस एक सार, है समयसार बिन सब असार ॥१०॥
मैं हूँ स्वभाव से समयसार, परिणति हो जाये समयसार ।
है यही चाह, है यही राह, जीवन हो जाये समयसार ॥११॥
ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालामहार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

समयसार है सार, और सार कुछ है नहीं ।
महिमा अपरम्पार, समयसारमय आपकी ॥१२॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)